International Research Journal ISSN-0975-3486 RNI : RAJBIL 01488 VOL. I * ISSUE—2

शोध पत्र- कला

Oct-Nov—2009

# छत्तीसगढ़ की नारियों के उत्थान में वेदमाता गायत्री ट्रस्ट का नारी जागरण आन्दोलन

*डॉ. के. के. सिंह **अनिता पाठक

*श्रम निरीक्षक, ए-19, बॉबजी नगर, तिफरा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

**वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, प्रज्ञा पीठ, सरकण्डा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

**1. शोध समस्या का परिचय** : भारत के प्राचीन इतिहास पर नजर डाली जाये तो यह स्पष्ट होता है कि समाज में महिलाओं की स्थिति सदैव एक सी नहीं थी। इसमें निरन्तर परिवर्तन होता रहा है। वर्तमान में महिलाओं की स्थिति को समझने के लिये प्राचीनकाल से लेकर, वर्तमान काल तक की सामाजिक स्थिति एवं भूमिका के उतार चढ़ाव को क्रमबद्ध रूप से जानना आवश्यक है। ऐतिहासिक एवं प्राग ऐतिहासिक काल के सामयिक एवं दार्शनिक ग्रन्थों से स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि भारतीय परम्पराओं एवं सामाजिक मान्यताओं के अन्तर्गत महिलाएं ना केवल सम्मानीय स्थान प्राप्त करती रही है वरन् वे पूजनीय भी रही है। महिलाओं की सामाजिक स्थिति में नकारात्मक परिवर्तन मुस्लिम ब्रिटिश काल का दुष्परिणाम है।

**1.1 भारत में नारी की स्थिति** : महिलाओं की सामाजिक स्थिति को ऐतिहासिक क्रम में समझने हेतु सबसे जटिल समस्या भारत के अतीत के काल विभाजन का है। विद्वान, समाजशास्त्री या इतिहासकार इस संबंध में एक मत नहीं है। अतएव उन समस्त आधारों पर स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को निर्धारित करना कठिन है। विभिन्न कालों की गणना तथा निर्धारण को लेकर विद्वानों में भिन्न–भिन्न मतभेद है। अतः सामान्य तौर पर काल विभाजन के मतभेदों को ध्यान में रखते हुये नारी की स्थिति को चार भागों में बांटकर अध्ययन किया गया है। प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं का स्थान सम्मान जनक और मर्यादायुक्त था। वैदिक समाज भारतीय इतिहास का आदर्श समाज रहा है जिसमें महिलाओं ने अधिकांश अधिकारों को पूर्णता के साथ उपभोग किया है। तद्युगीन गृह का अस्तित्व नारी के अधिकार में निहित माना जाता था। वैदिक युग में नारी को सभी पारिवारिक एवं सामाजिक अधिकार प्राप्त थे। उस युग में समाज के रचनाकारों ने बहू को परिवार की साम्राज्ञी का रूप प्रदान किया था। इस युग में नारी पति की सहधर्मिणी एवं मित्र होती थी। वेदकालीन युग में पर्दा प्रथा का चलन नहीं था। नारी पुरूषों के साथ कंधें से कंधा मिलाकर कार्य करती थी। नारी स्वतंत्र रूप से आम सभाओं एवं सामाजिक कार्यक्रमों में निर्भीक होकर भाग लेती थी। वेदकालीन युग में नारी वेद विद्या ग्रहण करने की अधिकारी होती थी। नारी यज्ञ में भाग लेकर मंत्रोच्चारण कर सकती थी। पति को अध्यात्मिक पूर्णता प्रदान करने के कारण विवाहित महिलाओं की धार्मिक स्थिति अविवाहित कन्याओं से उच्च थी। ऋग्वेद में इस बात का प्रमाण मिलता है कि आर्थिक क्षेत्र में नारी की स्थिति सुदृढ़ थी। उसे पिता और पति की संपत्ति पर पूर्ण अधिकार प्राप्त था। विधवा स्त्री को भी पुत्रवती होने पर संपत्ति का हिस्सा दिया जाता था।

वेदकालीन युग में नारी का विवाह अति आवश्यक माना जाता था। बहु विवाह का प्रचलन होते हुये भी पत्नियों के अधिकार सुरक्षित थे। प्रेम विवाह, स्वयंवर प्रथा तथा अर्न्तजातीय विवाह का चलन था। उत्तर वैदिक युग में नारी की स्थिति एवं अस्तित्व की स्वतंत्रता कम होने लगी। धर्मसूत्र, मनुसंहिता महाकाव्य तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तनों को झलक मिलती है। इस काल का महत्व विशेष रूप से इसलिये भी है कि स्मृतिकार मनु ने इस काल में हिन्दू समाज के लिये नियमों का एक ऐसा लौह ढांचा स्थापित किया, जो अठारहवीं सदी के अंत तक कायम रहा। सामाजिक विचारधारा के सिद्धांत के परिणाम स्वरूप नारी की स्थिति शिथिल होती गई नारी के संपूर्ण अधिकार जैसे – शिक्षा, धर्म, विवाह एवं संपत्ति के अधिकारों की स्थितियों में प्रतिबंध लगाया गया। इस तरह उत्तर वैदिक काल में नारी पोषित एवं उपेक्षित होती चली गई।

सम्पूर्ण मध्यकाल में नारी की स्थिति प्राचीन भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति जैसे उच्च नहीं रही। इस

काल में नारी दया का पात्र बनकर रह गई। मुगलों के आक्रमण के परिणाम स्वरूप नारी की स्थिति एवं स्वतंत्रता में परिवर्तन आया।

मुसलमानों के आक्रमण के परिणाम स्वरूप बाल विवाह नियम बनाये गये। कन्याओं का विवाह 12 वर्ष में किया जाने लगा। बाल विवाह के साथ–साथ महिलाओं की सुरक्षा के रूप में पर्दा–प्रथा प्रारंभ होकर संपूर्ण भारत में प्रचलित हुई। बहु–विवाह का प्रचलन बढ़ा, जिससे नारी का मान घटने लगा। विधवा स्त्री से जुड़े कट्टर प्रतिबंधों के कारण साधारणतया नारी सती होना पसंद करती थी जबकि सती प्रथा का चलन नहीं था।

स्त्री शिक्षा केवल उच्च कुलीन परिवारों तक ही सीमित थी। पद्मावती, मीरा बाई आदि इस युग की विदुषी महिलाएं थी। नृत्य, संगीत तथा चित्रकला का इस काल में नारियों में प्रचलित था राजनैतिक अधिकारों पर प्रतिबंध लगा दिये गये। इस युग में नारी पुरूषों पर आश्रित होकर चार–दीवारी तक ही कैद होकर रह गई। अतः इस काल में अनेक कुप्रथाओं के कारण नारी की स्थिति निम्न तथा दयनीय हो गई। इस काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर प्रथम 19 वीं सदी में पश्चिमी संस्कृति की उदारवादी विचारधारा का प्रभाव पड़ा जिसके तीन सिद्धांतों ने भारतीयों की विचारधारा महत्वपूर्ण प्रभाव डाला जिसमें प्रथम सिद्धांत था सामाजिक स्थिति एवं पारस्परिक संबंधों का निर्धारण जन्म से ना होकर कर्म एवं आत्म निर्णय से होता है। दूसरा सिद्धांत था उचित अनुचित की दृष्टि से विचार करने के बाद बुद्धि द्वारा निर्णय करके ही व्यक्ति को व्यवहार करना चाहिये। रीति–रिवाज रूढ़ि परम्परा तथा धार्मिक बंधनों का अंधानुसरण नहीं करना चाहिये। तीसरा सिद्धांत था वैयक्तिक स्वतंत्रता का प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय, मित्रता, विवाह तथा व्यवसाय संबंधी निर्णय करने का अधिकार स्वयं का है।

सामाजिक सुधार के क्षेत्र में यह युग स्त्रियों के उद्धार का युग था। यातायात सुविधा, राजनैतिक एकता, कानून में सुधार, संवैधानिक समानता, स्त्री शिक्षा आदि ने भारत में अंधविश्वास, स्वामीत्व की भावना, असमानता आदि को दूर करने का प्रयास किया। शिक्षित वर्ग अपने समाज, समूह, रीति–रिवाज परम्परा को नई दृष्टि से परखने का प्रयास करने लगा। समाज में नारी की स्थिति को सुधारने एवं परिवर्तन हेतु प्रचलित रीति–रिवाजों और प्रथाओं में परिवर्तन आवश्यक माना गया। इस युग में जिन विद्वानों और समाज– सुधारकों ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति को सुधारने का प्रयास किया, उनमें राजा राम मोहन राय प्रमुख थे। इन्होंने सती प्रथा निरोधक कानून बनवाने, महिलाओं के क्रय–विक्रय को रोकने तथा आर्थिक स्थिति को सुधारने हेतु प्रयास किया। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने भी बाल विवाह, दहेज प्रथा, बहुपत्नीत्व आदि का भी विरोध किया। महादेव गोविंद रानाडे ने महिला शिक्षा को प्राथमिकता देने का प्रयास किया। इंडियन नेशनल सोशल कांफ्रेंस की स्थापना कर रानाडे ने अपना सर्वोच्च कर्तव्य पूरा किया। स्वामी विवेकानंद एवं स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे समाज सुधारकों ने भी स्त्री शिक्षा को बल देते हुये बाल विवाह का कड़ा विरोध किया। नारियों के छीने हुये अधिकार इन्होंने पुनः वापस दिलाने का प्रयास किया जिसके परिणाम स्वरूप नारियों को सामाजिक विरासत की उत्तराधिकारिणी बनने का अवसर मिला तथा विवाह की आयु भी धीरे–धीरे बढ़ने लगी। जीवन साथी के चयन की भी स्वतंत्रता पर बल दिया जाने लगा। विधवाओं के लिये आश्रम खोलकर उनकी दशा सुधारने का प्रयास किया गया। नारी की सामाजिक स्थिति में सुधार के अनेकानेक प्रयास किया गया अतः स्पष्ट है कि इस काल में अनेक सामाजिक सुधारकों के प्रयत्नों ने समाज की उन्नति के लिये एक वैदिक चेतना पैदा की। उन्नीसवीं शताब्दी में मुख्यतः पुरूषों द्वारा महिलाओं की स्थिति में सुधार हेतु प्रयास किये गये तब बीसवीं सदीं में उन्होंने अपनी समस्या एवं दशा को सुधारने का प्रयास किया।

भारतीय समाज में स्वतंत्रता से पूर्व किये गये समाज सुधार आन्दोलनों एवं कानूनों के परिणाम स्वरूप नारी की सामाजिक स्थिति धीरे–धीरे सुधरने लगी किन्तु स्वतंत्रता पश्चात् इनकी स्थिति में तेजी से परिवर्तन हुआ। इसका प्रमुख कारण यह है कि स्त्रियों ने आज हिन्दू जीवन के परम्परागत सिद्धांतों को अस्वीकार किया और उसे चुनौती दी है। आज नारी की सामाजिक स्थिति में अनेक परिवर्तन हो गये। वर्तमान में नारी की स्थिति, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में ऊंची हुई। इसका प्रमुख कारण पश्चिमीकरण, लौकिकीकरण और जातीय गतिशीलता रही है। इसके साथ ही शिक्षा के प्रसार एवं औद्योगिकीकरण के कारण आर्थिक क्षेत्र में भी पुरूषों से आगे होती गई परिणाम स्वरूप वे पुरूषों पर निर्भर नहीं रही। व्यक्तिगत विकास के समान अवसर उन्हें मिलने लगे। नारी अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिये समाचार पत्र, संचार के साधनों, पत्र पत्रिकाओं को माध्यम के रूप में अपनाया। सामाजिक एवं पारिवारिक अधिकारों में संयुक्त परिवार का विघटन हुआ और एकांकी परिवार की वृद्धि हुई।

सामाजिक अधिनियमों ने एक ऐसे सामाजिक वातावरण को जन्म दिया जिसमें बाल विवाह, दहेज प्रथा, अन्तर्जातीय विवाह जैसी समस्याओं का निदान संभव हो गया।

इस तरह शैनः–शैनः आधुनिक काल में नारी की स्थिति में उपरोक्त सभी क्षेत्रों के साथ–साथ धार्मिक, सांस्कृतिक

एवं परम्परागत परिवर्तन भी हुये। सामाजिक जागरूकता के परिणामस्वरूप नारियां रूढ़िवादी प्रथाओं एवं परम्पराओं से मुक्त होने लगी।

**2. अध्ययन की परिकल्पना** : वेदमाता गायत्री ट्रस्ट का नारी जागरण आंदोलन से छत्तीसगढ़ की नारियों की स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन आया है।

**3. अध्ययन का उददेश्य** : इस अध्ययन का मूल उद्देश्य वेदमाता गायत्री ट्रस्ट द्वारा संचालित नारी जागरण आंदोलन एवं कार्यक्रमों के माध्यम से नारियों की स्थिति में परिवर्तनों का आंकलन करना है।

**4. अध्ययन का क्षेत्र** : भारत के विभिन्न प्रदेशों में 1991 शक्तिपीठ (ट्रस्ट) की स्थापना की गई है छत्तीसगढ़ में कुल 18 शक्ति पीठ व 415 प्रज्ञापीठ है। इन पीठों का संचालन वेदमाता गायत्री ट्रस्ट द्वारा किया जाता है। छत्तीसगढ़ के 18 जिलो में 18 वेदमाता गायत्री शक्तिपीठ स्थापित है। छत्तीसगढ़ में कुल शक्तिपीठों के ट्रस्टों के सदस्यों की संख्या 162 है, जिसमें से बहुस्तरीय निर्देशन पद्धति के आधार पर छत्तीसगढ़ के प्रत्येक जिले के शक्तिपीठ से 3 सदस्यों का चयन किया गया है। इस प्रकार छत्तीसगढ़ से 54 ट्रस्ट के सदस्यों का चयन किया गया है। अध्ययन का वर्ष 2008–2009 है।

**5. भाोध प्ररचना** : अध्ययन हेतु शोध प्रचना का उपयोग किया गया है जिसके अंतर्गत छत्तीसगढ़ की नारियों के उत्थान में वेदमाता गायत्री ट्रस्ट का नारी जागरण आंदोलन की भूमिका को ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित पद्धतियों का उपयोग किया गया है।

**5.1 तथ्य संकलन के स्रोत** :प्राथमिक स्रोत के अंतर्गत संरचित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है जिसमें छत्तीसगढ़ के प्रत्येक जिले के शक्तिपीठ से 3 सदस्यों का निदर्शन पद्धति से चयन किया गया है। इस प्रकार छत्तीसगढ़ से कुल 54 सदस्यों को साक्षात्कार हेतु चयन किया गया है।

द्वितीयक स्रोत के अंतर्गत वेदमाता गायत्री ट्रस्ट से संबंधित पत्र–पत्रिकायें, वेद पुराण एवं संबंधित साहित्यों का अध्ययन किया गया है तथा जानकारियां प्राप्त की गई है। इस शोध कार्य में सहभागी अवलोकन पद्धति का भी उपयोग किया गया है। अध्ययन में संबंधित आंकड़ों को एकत्रित करने के पश्चात् नि कर्ष पर पहुंचने के लिये तथ्यों का विश्ले ाण किया गया। तथ्य संकलन हेतु सहभागी अवलोकन एवं साक्षात्कार विधि का उपयोग किया गया है।

साक्षात्कार एवं अवलोकन विधि द्वारा प्राथमिक समंक स्त्रोतों से जानकारी इकट्ठा की गई। संरचित साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया। वेदमाता गायत्री ट्रस्ट की सभी शाखाओं के सदस्यों से संबंधित वि ाय की जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् वेदमाता गायत्री ट्रस्ट द्वारा चलाये जा रहे नारी जागरण आंदोलन से संबंधित प्रश्न साक्षात्कार अनुसूची में जोड़े गये। चयनित वेदमाता गायत्री ट्रस्ट के सदस्यों से संबंधित विषयों के उत्तरों को जांच करने के लिये चयनित सदस्यों के अभिमतों को एकत्रित किया गया और परिणामों को प्राप्त करने के लिये मापन विधी, प्रतिशत, औसत और अन्य सांख्यिकी विधियों का उपयोग किया गया।

**6. वेदमाता गायत्री ट्रस्ट द्वारा संचालित नारी जागरण हेतु आन्दोलन** : नारी परिवार संस्था को सशक्त बनाने के साथ–साथ समाज की प्रगति में महती भूमिका निभाती रही है। मध्यकाल में नारी सभी अधिकारों से वंचित रहकर दलित पराधीन और अपंग बनकर रह गई जिसके परिणाम स्वरूप परिवार, समाज और रा ट्र में अनेक समस्याएं उत्पन्न हो गई। वेदमाता गायत्री ट्रस्ट नारी की इन्ही समस्याओं को ध्यान में रखते हुये उनके मानसिक विकास हेतु योग और यज्ञोपैथी चिकित्सा प्रशिक्षण, सत्रों के माध्यम से देती है। नारी की आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु लघु एवं कुटीर उद्योग, ग्रामीण प्रबंधन एवं स्वावलंबन का प्रशिक्षण यहां निःशुल्क दिया जाता है।

नारी परिवार में सत्प्रवृत्तियों का विकास कर सके, इस उद्देश्य हेतु संस्कार परम्परा को पुर्नजीवित करने का प्रयास इस ट्रस्ट द्वारा किया जाता है जिसमें भाोड्स संस्कार करने एवं करवाने का प्रशिक्षण वैदिक रीति से दिया जाता है। नारियों को गायत्री मंत्र का जाप करने के अधिकार नहीं है, इस भ्रामक मान्यताओं को इस ट्रस्ट द्वारा स्वतंत्र किया गया है तथा नारी को गायत्री मंत्र जाप एवं यज्ञोपवित धारण करने का अधिकार इस ट्रस्ट द्वारा दिया गया है। नारियों के स्वस्थ मनोरंजन हेतु विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्रो एवं प्रज्ञागीतों के गायन का प्रशिक्षण वेदमाता गायत्री ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क दिया जाता है। ''नर–नारी एक समान'' नारी का सम्मान जहां है संस्कृति का उत्थान वहां है'' जैसे ओजपूर्ण नारों का प्रयोग इस ट्रस्ट द्वारा किया जाता है। वेदमाता गायत्री ट्रस्ट इस आन्दोलन में कितनी सफल हो पाई इसका पु ट अध्ययनगत तथ्यों के आंकलन से हो जायेगी जो निम्नलिखित है–

वेदमाता गायत्री ट्रस्ट के नारी जागरण आन्दोलन से सम्बन्धित साक्षात्कार से ज्ञात हुआ है कि अध्ययनगत वेदमाता गायत्री ट्रस्ट में वैदिक काल में नारियों की स्थिति के संबंध में 98.15 प्रतिशत सदस्यों के अनुसार नारी की स्थिति उच्च थी। इस काल में नारियों को सभी अधिकार प्राप्त थे। 79.63 प्रतिशत सदस्यों का अभिमत है कि स्वतंत्रता के पूर्व पारिवारिक, वैवाहिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक अधिकार थे। 85.19 प्रतिशत सदस्यों के अनुसार वर्तमान में नारियों की स्थिति मध्यम है। 96.30 प्रतिशत सदस्यों का अभिमत है

कि परम्परागत सिद्धांतों की उपयोगिता ना होना, संविधान एवं कानून, शिक्षा का प्रसार एवं पारिवारिक अधिकारों में वृद्धि के कारण वर्तमान में नारी की स्थिति में परिवर्तन आया है। 100.00 प्रतिशत सदस्यों का मानना है कि संत, मनी ाी एवं समाज सुधारको द्वारा नारी की स्थिति में सुधार आया है। शत–प्रतिशत सदस्यों ने स्वीकार करते हुये कहा है, कि वेदमाता गायत्री ट्रस्ट द्वारा नारी की स्थिति में सुधार लाने का प्रयास किया गया है। 83.33 प्रतिशत सदस्यों के अभिमतानुसार वेदमाता गायत्री ट्रस्ट द्वारा नारी उत्थान हेतु नारी शिक्षा, दहेज प्रथा बालविवाह, नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक प्रयास किये जा रहे है। 83.33 प्रतिशत सदस्यों का अभिमत है कि वेदमाता गायत्री ट्रस्ट द्वारा नारी उत्थान का मुख्य उद्देश्य नारी को सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं पारिवारिक दृष्टि से सुदृढ़ बनाना है 79.63 प्रतिशत सदस्यों का मानना है कि इस ट्रस्ट द्वारा नारी उत्थान हेतु महिला स्वास्थ्य संरक्षण, सामाजिक कुरीतियों एवं मूढ़मान्यताओं, आर्थिक स्वावलंबन, नारी सम्मान की रक्षा एवं परिवार समूह के संगठन जैसे कार्यक्रम चलाये जा रहे है। 88.33 प्रतिशत सदस्यों का अभिमत है कि वेदमाता गायत्री ट्रस्ट द्वारा भारतीय संस्कृति के अनुरूप नारी दशा में परिवर्तन लाया जा रहा है। 98.15 प्रतिशत सदस्यों ने ''इक्कीसवीं सदी नारी सदी होगी'' गायत्री ट्रस्ट की इस उद्घो ाणा को स्वीकार किया है। 96.30 प्रतिशत सदस्य इस ट्रस्ट द्वारा संचालित नारी जागरण अभियान से संतु ट है।

7. निष्कर्ष : वेदमाता गायत्री ट्रस्ट द्वारा नारी की स्थिति में सुध ाार लाने का प्रयास किया जा रहा है साथ ही नियोजित तरीके से सामाजिक परिवर्तन लाने की दिशा में कटिबद्ध है। वेदमाता गायत्री ट्रस्ट का नारी जागरण आंदोलन छत्तीसगढ़ की नारियों के उत्थान में भूमिका सफल रही है और छत्तीसगढ़ की नारियों की स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन आया है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ


(i) श्रीराम शर्मा – ''21वी सदी नारी सदी'' प्रकाशक अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा (उ.प्र.)

(ii) श्रीराम शर्मा – '' नारी जागृति की बाधायें एवं उनके निराकरण के उपाय'' प्रकाशक अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा (उ.प्र.)

(iii) श्रीराम शर्मा – ''नारी उत्थान, समय की समस्या और समाधान'' प्रकाशक अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा (उ.प्र.)

(iv) श्रीराम शर्मा – '' नारी उत्थान में समाज का उत्तरदायित्व'' प्रकाशक अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा (उ.प्र.)

(v) श्रीराम शर्मा – '' नारी उत्थान में समाज का उत्तरदायित्व'' प्रकाशक अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा (उ.प्र.)

(vi) सिंह जीव कृश्ण (2000) ''सामाजिक विघटन'' प्रकाशन केन्द्र, रेल्वे क्रासिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ (उ.प्र.)

(vii) वर्मा ओमप्रकाश (1985) ''भारतीय संस्कृति तथा सामाजिक संस्थाएं'' रंजन प्रकाशन गृह, सी–5/बी, सफदरजंग योजना, नई दिल्ली.